



पतंजलि विश्वविद्यालय, (हरिद्वार)

University of Patanjali, Haridwar

**PROGRAMME PROJECT
REPORT (PPR)**

एम. ए. संस्कृत साहित्य

M.A. SANSKRIT LITERATURE

Open and Distance Learning Programme

(शैक्षणिक सत्र 2026–2027 से प्रभावी)

(Effective from the Academic Session 2026–2027)



Accredited with Grade A+ by NAAC



पतंजलि विश्वविद्यालय, (हरिद्वार)

PROGRAMME PROJECT REPORT (PPR)

एम. ए. संस्कृत साहित्य

Open and Distance Learning Programme

(शैक्षणिक सत्र 2026–2027 से प्रभावी)

(Effective from the Academic Session 2026–2027)

Contents

1.विश्वविद्यालय परिचय.....	4
2.विश्वविद्यालय की दृष्टि (Vision)	4
3.विश्वविद्यालय का लक्ष्य (Mission).....	4
4. कार्यक्रम का परिचय एमसंस्कृतम् . ए.	5
5.कार्यक्रम की आवश्यकता एवं महत्व	5
6. कार्यक्रम के शैक्षिक उद्देश्य (Programme Educational Objectives)	6
7.कार्यक्रम परिणाम (Programme Outcomes)	6
8.विश्वविद्यालय मिशन से कार्यक्रम की प्रासंगिकता	8
9.लक्षित शिक्षार्थी (Target Learners).....	8
10.कौशल विकास एवं दक्षता निर्माण	9
11.Instructional Design (शिक्षण(अधिगम प्रणाली-.....	9
12.कार्यक्रम संरचना	10
13.मूल्यांकन प्रणाली	12
14.रोजगार एवं उच्च शिक्षा के अवसर	13
15.प्रवेश प्रक्रिया	13
16) शुल्क संरचना .Indicative)	14
17.गुणवत्ता आश्वासन प्रणाली.....	15
18.शैक्षणिक संसाधन (Faculty Resources).....	15
19.अवसंरचना सहयोग (Infrastructure Support).....	16
20.प्रयोगशाला सहयोग एवं पुस्तकालय संसाधनों की आवश्यकता	17
21.कार्यक्रम की लागत का अनुमान एवं प्रावधान.....	17

1. विश्वविद्यालय परिचय

पतंजलि विश्वविद्यालय भारत की अग्रणी उच्च शिक्षण संस्थाओं में से एक है, जो प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा तथा आधुनिक वैज्ञानिक शिक्षा के समन्वय हेतु समर्पित है। यह विश्वविद्यालय उत्तराखण्ड राज्य के पवित्र नगर हरिद्वार के समीप स्थित है, जहाँ आध्यात्मिकता, संस्कृति एवं शिक्षा का अद्भुत वातावरण विद्यमान है। विश्वविद्यालय का नाम महान योगदृष्टा महर्षि पतंजलि के नाम पर रखा गया है, जिन्होंने योगसूत्रों के माध्यम से मानवता को चित्तशुद्धि, आत्मविकास और मोक्ष का मार्ग प्रदान किया।

विश्वविद्यालय का प्रमुख उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा जैसे योग, आयुर्वेद, संस्कृत, दर्शन, वेद, उपनिषद् तथा शास्त्रीय विषयों को आधुनिक पद्धति से विद्यार्थियों तक पहुँचाना है। इसके साथ-साथ विज्ञान, मानविकी, सामाजिक विज्ञान एवं व्यावसायिक विषयों में भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान की जाती है।

विश्वविद्यालय शिक्षण, शोध, प्रशिक्षण, चरित्र निर्माण और राष्ट्र निर्माण के समन्वित दृष्टिकोण पर कार्य करता है। Open and Distance Learning (ODL) प्रणाली के माध्यम से यह संस्था उन विद्यार्थियों तक शिक्षा पहुँचाने के लिए प्रतिबद्ध है जो किसी कारणवश नियमित शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते।

2. विश्वविद्यालय की दृष्टि (Vision)



- विश्वबन्धुत्व की भावना के साथ प्राचीन वैदिक ज्ञान एवं नूतन वैज्ञानिक अनुसन्धान के समायोजन से वैश्विक चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत करना।
- प्राचीन भारतीय संस्कृति सार्वकालिक, सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों को स्वयं में समाहित किए हुए है, अतः भारतीय संस्कृति व ज्ञान परम्परा को। पुनः प्रतिष्ठा दिलाने एवं भारत को पुनः विश्व गुरु बनाने के उद्देश्य से स्वस्थ, सुयोग्य व चरित्रवान नागरिकों का निर्माण करना।

3. विश्वविद्यालय का लक्ष्य (Mission)



- योग, आयुर्वेद एवं संस्कृत का शिक्षण की मुख्यधारा में प्रतिष्ठापन
- प्राचीन वैदिक ज्ञान का आधुनिक विज्ञान के साथ एकीकरण
- विज्ञान एवं आध्यात्मिकता के सम्मिश्रण से शान्तिपूर्ण जीवनशैली का मार्गदर्शन
- प्राचीन ज्ञान एवं संस्कृति का संरक्षण व संवर्धन

4. कार्यक्रम का परिचय

M.A. संस्कृतम् दो वर्षीय स्नातकोत्तर कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों को संस्कृत वाङ्मय की विशाल साहित्यिक विरासत, काव्यशास्त्रीय सिद्धांतों, व्याकरणिक संरचनाओं और वैदिक ऋचाओं के गंभीर रहस्यों का व्यवस्थित ज्ञान प्रदान करना है।

संस्कृत साहित्य विश्व के प्राचीनतम और सर्वाधिक वैज्ञानिक साहित्यों में से एक है, जो केवल भाषाई कौशल तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानव सभ्यता के बौद्धिक उत्कर्ष, नैतिक मर्यादा और सौंदर्यपरक दृष्टिकोण का जीवंत दस्तावेज़ है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यार्थी कालिदास, बाणभट्ट और भास जैसे कालजयी रचनाकारों के काव्यों एवं नाटकों के साथ-साथ ध्वन्यालोक, काव्यप्रकाश और साहित्यदर्पण जैसे शास्त्रीय ग्रंथों का गहन अनुशीलन करेंगे।

विद्यार्थी यह समझ सकेंगे कि किस प्रकार संस्कृत के आचार्यों ने रस, अलंकार, रीति और ध्वनि के माध्यम से अभिव्यक्ति की पराकाष्ठा को छुआ है। इसके साथ ही, वैदिक साहित्य और उपनिषदों का अध्ययन विद्यार्थियों को जीवन के शाश्वत सत्य और सार्वभौमिक बंधुत्व (वसुधैव कुटुंबकम्) की भावना से परिचित कराएगा।

यह कार्यक्रम आधुनिक समय में विद्यार्थियों के भीतर शोधपरक दृष्टि, भाषाई शुद्धता, सांस्कृतिक गौरव और उच्च नैतिक नेतृत्व क्षमता विकसित करने में पूर्णतः सहायक सिद्ध होगा।

5. कार्यक्रम की आवश्यकता एवं महत्व

वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य केवल सूचनाओं का संग्रह या जीविकोपार्जन नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण, सांस्कृतिक बोध और मानवीय संवेदनाओं का विकास होना चाहिए। **M.A. संस्कृतम्** का कार्यक्रम इन उद्देश्यों की प्राप्ति का सबसे सशक्त माध्यम है। संस्कृत साहित्य केवल शब्दों का समूह नहीं, बल्कि भारतीय मेधा (Intellect) के हज़ारों वर्षों के चिंतन का निचोड़ है।

यह कार्यक्रम विद्यार्थियों को सिखाता है कि साहित्य किस प्रकार समाज का दर्पण होने के साथ-साथ उसका मार्गदर्शक भी होता है। जहाँ एक ओर कालिदास का साहित्य सौंदर्य और प्रकृति प्रेम की शिक्षा देता है, वहीं दूसरी ओर 'नीति काव्य' जीवन के कठिन संघर्षों में सही निर्णय लेने का विवेक प्रदान करते हैं। संस्कृत साहित्य व्यक्ति को धैर्य, उदात्त चरित्र और 'अति सर्वत्र वर्जयेत्' जैसे संतुलन के सिद्धांतों से परिचित कराता है।

"सा विद्या या विमुक्तये" अर्थात् विद्या वही है जो मनुष्य को अज्ञान, संकीर्णता और मानसिक बंधनों से मुक्त करे।

आज के इस भागदौड़ भरे और तनावपूर्ण युग में संस्कृत साहित्य की प्रासंगिकता और भी बढ़ गई है। यह विद्यार्थियों को केवल भौतिक सफलता की अंधी दौड़ में शामिल नहीं करता, बल्कि उन्हें मानसिक शांति, आत्मिक संतोष और 'वसुधैव कुटुंबकम्' (विश्व एक परिवार है) की उदात्त भावना से ओत-प्रोत करता है। यह साहित्य व्यक्ति के भीतर संवेदनशीलता जगाता है, जिससे समाज में समरसता और नैतिकता का संचार होता है। अतः, अपनी जड़ों को समझने और आधुनिक समस्याओं का शाश्वत समाधान खोजने के लिए संस्कृत साहित्य का अध्ययन अनिवार्य है।

6. कार्यक्रम के शैक्षिक उद्देश्य (Programme Educational Objectives)

शिक्षा सभी को सरलता से उपलब्ध हो सके, दूर दराज के गांवों और नगर से कटे हुए क्षेत्रों तक शिक्षा का विस्तार हो सके, इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए दूरस्थ शिक्षण कार्य किया जाना आवश्यक है। पतंजलि विश्विद्यालय का मुख्य प्रयोजन ODL द्वारा भौगोलिक और आर्थिक रूप से पिछड़े क्षेत्रों तक शिक्षा का विस्तार करना है

कार्यक्रम के प्रमुख उद्देश्य (PEOs)

- **PEO1 - संस्कृत वाङ्मय एवं साहित्य की गहरी समझ:** संस्कृत साहित्य के विभिन्न अंगों (वैदिक, पौराणिक, काव्यशास्त्रीय एवं लौकिक साहित्य) के मूलभूत सिद्धांतों और उनकी संरचना का व्यापक ज्ञान प्रदान करना।
- **PEO2 - भाषाई एवं तार्किक कौशल का विकास:** व्याकरण (Grammar) और निरुक्त के माध्यम से भाषा की वैज्ञानिकता को समझना और विद्यार्थियों में सूक्ष्म विश्लेषण एवं तर्कशक्ति का विकास करना।
- **PEO3 - सांस्कृतिक एवं वैश्विक चेतना:** संस्कृत साहित्य में निहित सार्वभौमिक मूल्यों (जैसे- सत्य, अहिंसा, करुणा) के माध्यम से सामाजिक और वैश्विक कल्याण में साहित्य के योगदान को रेखांकित करना।
- **PEO4 - विधागत एवं शैलीगत अंतर का ज्ञान:** वैदिक सूक्तों, शास्त्रीय काव्यों, नाटकों और गद्य विधाओं के बीच के सूक्ष्म अंतर, उनकी शैली और उनके ऐतिहासिक क्रमिक विकास का बोध कराना।
- **PEO5 - राष्ट्र निर्माण एवं नैतिक उत्तरदायित्व:** विद्यार्थियों में राष्ट्र के प्रति गौरव का भाव जगाना और साहित्य के माध्यम से समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी (Responsibility) एवं स्वामित्व (Ownership) के भाव को सुदृढ़ करना।
- **PEO6 - साहित्य का व्यावहारिक आचरण:** संस्कृत साहित्य को केवल 'पढ़ने' तक सीमित न रखकर, उसमें वर्णित उदात्त जीवन-मूल्यों और 'आचारः परमो धर्मः' जैसे सिद्धांतों को अपने व्यक्तिगत जीवन में आत्मसात करना।

- **PEO7 - वक्तृत्व, संवाद एवं नेतृत्व क्षमता:** श्लोक पाठ, शास्त्रार्थ परंपरा और संस्कृत संभाषण के माध्यम से विद्यार्थियों में प्रभावी वक्तृत्व, आत्मविश्वास और एक ओजस्वी नेतृत्व (Divine Domination) का भाव विकसित करना।

7.कार्यक्रम परिणाम (Programme Outcomes)

इस कार्यक्रम को पूर्ण करने के पश्चात विद्यार्थी निम्न योग्यताएँ प्राप्त करेगा:

- **PO1 - साहित्यिक एवं शास्त्रीय धाराओं का तुलनात्मक अध्ययन:** विद्यार्थी विभिन्न काव्यों, नाटकों और व्याकरणिक संप्रदायों का तुलनात्मक विश्लेषण करने में सक्षम होगा। वह वैदिक और लौकिक साहित्य के मध्य के अंतर्संबंधों को समझ सकेगा।
- **PO2 - भाषाई एवं तार्किक विश्लेषण:** संस्कृत व्याकरण और निरुक्त के गहन अध्ययन के माध्यम से विद्यार्थी शब्दों की व्युत्पत्ति, वाक्य संरचना और भाषाई शुद्धता का तार्किक विश्लेषण कर सकेगा।
- **PO3 - प्राचीन (Classical) और अर्वाचीन (Modern) साहित्यकारों का परिचय:** विद्यार्थी न केवल महर्षि वाल्मीकि, व्यास और कालिदास जैसे प्राचीन मनीषियों के साहित्य से परिचित होगा, बल्कि आधुनिक संस्कृत रचनाकारों और उनकी समकालीन कृतियों का भी ज्ञान प्राप्त करेगा।
- **PO4 - स्वतंत्र वैचारिक अभिव्यक्ति और आलोचनात्मक चिंतन:** विद्यार्थी में साहित्य की विभिन्न विधाओं की समीक्षा करने, काव्य दोषों और गुणों को पहचानने तथा किसी भी विषय पर स्वतंत्र और आलोचनात्मक दृष्टिकोण रखने की क्षमता विकसित होगी।
- **PO5 - समाज, संस्कृति और धर्म का साहित्यिक दृष्टिकोण:** विद्यार्थी यह समझ पाएगा कि संस्कृत साहित्य किस प्रकार भारतीय संस्कृति, धर्म और सामाजिक मूल्यों का संवाहक रहा है। वह साहित्य के माध्यम से सांस्कृतिक चेतना का प्रसार करने में सक्षम होगा।
- **PO6 - व्यक्तिगत, सामाजिक और राष्ट्र निर्माण के लिए सामर्थ्य:** विद्यार्थी में संस्कृत में निहित 'लोक-कल्याण' की भावना जाग्रत होगी। वह अपनी विद्वत्ता का उपयोग व्यक्तिगत चरित्र निर्माण, सामाजिक समरसता और राष्ट्र की गौरवशाली विरासत को अक्षुण्ण रखने के लिए कर सकेगा।

8. विश्वविद्यालय मिशन से कार्यक्रम की प्रासंगिकता

यह कार्यक्रम विश्वविद्यालय के मूल ध्येय और मिशन से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है। विश्वविद्यालय भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) के संरक्षण, संवर्धन और पुनरुत्थान हेतु संकल्पित है, और संस्कृत साहित्य इस संपूर्ण परंपरा की आधारशिला है। बिना संस्कृत के भारतीय ज्ञान और संस्कृति का सम्यक् बोध असंभव है।

संस्कृत साहित्य का अध्ययन विद्यार्थियों को केवल भाषाई दक्षता या साहित्यिक आनंद ही नहीं देता, बल्कि उन्हें उन उच्च मानवीय आदर्शों और नैतिक मूल्यों से जोड़ता है जो हमारे ग्रंथों में निहित हैं। यह कार्यक्रम विश्वविद्यालय के अन्य विभागों जैसे योग, दर्शन, आयुर्वेद और प्राचीन इतिहास के अध्ययन के लिए एक मजबूत सेतु का कार्य करता है, क्योंकि इन सभी विषयों के मूल स्रोत संस्कृत भाषा में ही संचित हैं।

इस प्रकार, यह कार्यक्रम विश्वविद्यालय के उस व्यापक उद्देश्य को पूर्ण करता है जिसमें शिक्षा के माध्यम से 'सांस्कृतिक पुनर्जागरण' और 'चरित्रवान राष्ट्र निर्माण' की कल्पना की गई है। इसके माध्यम से तैयार होने वाले विद्यार्थी न केवल संस्कृत के विद्वान होंगे, बल्कि वे भारतीय गौरवशाली विरासत के ऐसे संवाहक होंगे जो आधुनिक विश्व को प्राचीन मेधा के आलोक से लाभान्वित कर सकेंगे।

9. लक्षित शिक्षार्थी (Target Learners)

यह कार्यक्रम उन सभी शिक्षार्थियों के लिए उपयोगी है जो भारतीय ज्ञान परंपरा, दर्शन, संस्कृति और मूल्यपरक शिक्षा में रुचि रखते हैं।

विशेष रूप से यह निम्न वर्गों के लिए उपयुक्त है:

- संस्कृत / humanities के विद्यार्थी
- प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने वाले विद्यार्थी
- कार्यरत कर्मचारी
- गृहिणियाँ
- संस्कृत एवं शास्त्र अध्ययन के इच्छुक विद्यार्थी
- आध्यात्मिक अभिरुचि वाले व्यक्ति
- आजीवन शिक्षार्थी

10. कौशल विकास एवं दक्षता निर्माण

इस कार्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों में निम्न दक्षताओं का विकास होगा:

- आलोचनात्मक चिंतन (Critical Thinking)
- तार्किक विश्लेषण (Logical Analysis)
- संप्रेषण कौशल (Communication Skills)
- नैतिक निर्णय क्षमता
- लेखन एवं प्रस्तुतीकरण कौशल
- नेतृत्व, वक्तृत्व एवं अतिसूक्ष्म विषयों के बोध की क्षमता
- आत्मअनुशासन एवं आत्मविश्वास

ये कौशल विद्यार्थियों को व्यक्तिगत, सामाजिक और व्यावसायिक जीवन में सफल बनाएँगे।

11. Instructional Design (शिक्षण-अधिगम प्रणाली)

कार्यक्रम को ODL mode के अनुरूप इस प्रकार तैयार किया गया है कि विद्यार्थी घर बैठे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त कर सकें। अध्ययन सामग्री- विद्यार्थियों को मुद्रित एवं डिजिटल Self Learning Material (SLM) उपलब्ध कराया जाएगा। सामग्री सरल भाषा, उदाहरणों और चित्रों सहित होगी।

ऑनलाइन संसाधन

- Video Lectures
- Live and Recorded Classes
- PPT Notes
- e-Books
- LMS Portal

Academic Support

- Online Doubt Clearing Sessions
- Email Support
- PCP (Personal Contact Programme)
- Faculty Guidance Sessions

इस प्रकार कार्यक्रम स्व-अध्ययन एवं मार्गदर्शित अध्ययन दोनों का संतुलित मॉडल प्रस्तुत करता है।

12.कार्यक्रम संरचना

यह कार्यक्रम दो वर्ष की अवधि का होगा तथा चार सेमेस्टर में विभाजित रहेगा। प्रत्येक सेमेस्टर में मूल विषय, कौशल आधारित विषय तथा सहायक विषय सम्मिलित होंगे। कार्यक्रम क्रेडिट आधारित प्रणाली पर आधारित होगा, जिससे विद्यार्थी व्यवस्थित रूप से अध्ययन कर सकें।

Semester I

S. No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit			
				Credits	CA	SE E	Subject Total
1	Discipline Specific Major	MSSAMJ-101	वैदिकसंहिता	5	25	75	100
2	Discipline Specific Major	MSSAMJ-102	काव्यनाटकम्	5	25	75	100
3	Discipline Specific Major	MSSAMJ-103	गद्य-पद्य-काव्यं नाट्यसाहित्यञ्च	4	25	75	100
4	Discipline Specific Minor	MSSAMN-104	व्याकरणप्रवेशः	4	25	75	100
5	Inter Disciplinary	MSSAID-105	योगदर्शनम् (सव्यासभाष्यम्)	4	25	75	100
Total Credits							22

Semester II

S. No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit			
				Credits	CA	SEE	Subject Total
1	Discipline Specific Major	MSSAMJ-201	उपनिषद्बोधः	5	25	75	100
2	Discipline Specific Major	MSSAMJ-202	काव्यं काव्यशास्त्रञ्च	5	25	75	100
3	Discipline Specific Major	MSSAMJ-203	न्याय-वैशेषिकदर्शनम्	4	25	75	100
4	Discipline Specific Minor	MSSAMN-204	सञ्ज्ञासन्धिशब्दरूपम्	4	25	75	100
5	Inter Disciplinary	MSSAID-205	सब्रह्ममुनिभाष्यं वेदान्तदर्शनम् (चतुर्थोध्यायः)	2	15	35	50
6	Reaserch Related Courses/Activities	MSSARE-206	Research and Publication Ethics	2	15	35	50
Total Credits							22

Semester III

S. No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit			
				Credits	CA	SEE	Subject Total
1	Discipline Specific Major	MSSAMJ-301	विभन्नसम्प्रदाय तथा काव्यशास्त्रीय ग्रन्थों का परिचय	4	25	75	100
2	Discipline Specific Major	MSSAMJ -302	महाकाव्यं खण्डकाव्यञ्च	4	25	75	100
3	Discipline Specific Minor	MSSAMJ -303	काव्यप्रकाशं ध्वन्यालोकञ्च	4	25	75	100
4	Discipline Specific Minor	MSSAMN -304	तिङ्कृत्प्रक्रिया	4	25	75	100
5	Skill Enhancement	MSSASE-305 (1)	सस्वरवेदपाठः	2	15	35	50
	Skill Enhancement	MSSASE-305 (2)	भारतीयनृत्यपरिचयः (भरतनाट्यम्)				
6	Reaserch Related Courses/Activities	MSSARE-306	Research Medothology	4	25	75	100
Total Credits							22

Semester IV

S. No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit			
				Credits	CA	SEE	Total
1	Discipline Specific Major	MDPHMJ-401	काव्यप्रकाशं मीमांसा च	5	25	75	100
2	Discipline Specific Major	MDPHMJ-402	दशरूपकं चम्पूकाव्यञ्च	5	25	75	100
3	Discipline Specific Minor	MDPHMN-403	प्रतिष्ठितकवि-अध्ययनम्	4	25	75	100
4	Discipline Specific Minor	MDPHMN-404	कारकसमासाव्ययस्त्रीप्रत्यय तद्धितार्थाः	4	25	75	100
5	Reaserch Related Courses/Activities	MDPHRE-405	Project/Dissertation	4	25	75	100
Total Credits							22

13.मूल्यांकन प्रणाली

विद्यार्थियों का मूल्यांकन निरंतर एवं अंतिम परीक्षा दोनों के आधार पर किया जाएगा।

Continuous Assessment – 25%

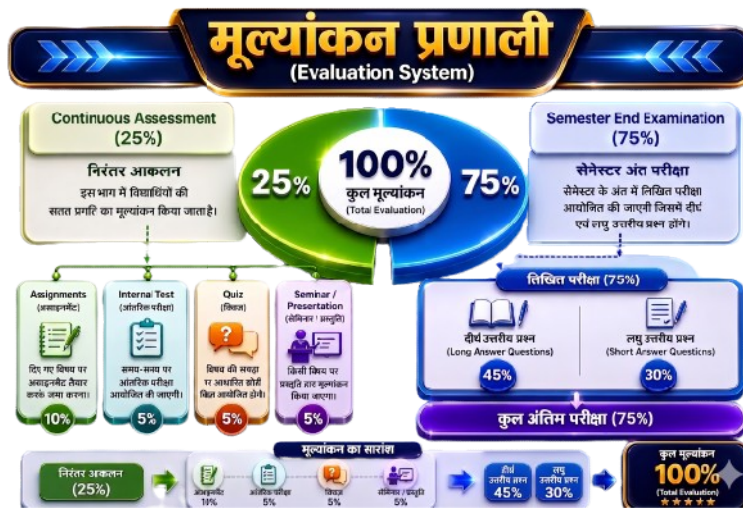
- Assignments
- Internal Test
- Quiz
- Seminar / Presentation

Semester End Examination – 75%

सेमेस्टर के अंत में लिखित परीक्षा आयोजित की जाएगी, जिसमें दीर्घ एवं लघु उत्तरीय प्रश्न होंगे।

Section	Questions	Marks
A	3/5 Long Answer	45
B	6/7 Short Answer	30
Total		75

इस प्रणाली से विद्यार्थियों की सतत प्रगति एवं विषय ज्ञान दोनों का मूल्यांकन संभव होगा।



14. रोजगार एवं उच्च शिक्षा के अवसर

एम.ए संस्कृतम् कार्यक्रम के पश्चात विद्यार्थी निम्न क्षेत्रों में अवसर प्राप्त कर सकते हैं:

- PhD in Sanskrit
- UGC NET / JRF
- Teaching (Assistant Professor)
- Research Institutes
- Civil Services
- Spiritual Counselling
- Content Writin

15. प्रवेश प्रक्रिया

एम.ए संस्कृतम् कार्यक्रम में प्रवेश प्रक्रिया को सरल, पारदर्शी एवं छात्र-केंद्रित बनाया गया है, ताकि विभिन्न पृष्ठभूमि के अभ्यर्थी सहजता से नामांकन कर सकें। यह प्रक्रिया मुख्यतः चार चरणों—ऑनलाइन आवेदन (Online Form), दस्तावेज़ सत्यापन (Document Verification), शुल्क भुगतान (Fee Payment) तथा नामांकन की पुष्टि (Enrollment Confirmation)—में पूर्ण की जाती है।

- ◆ प्रथम चरण में अभ्यर्थी को विश्वविद्यालय की आधिकारिक वेबसाइट पर उपलब्ध ऑनलाइन आवेदन प्रपत्र (Online Form) को सावधानीपूर्वक भरना होता है। इस प्रपत्र में व्यक्तिगत विवरण (जैसे नाम, जन्मतिथि, संपर्क जानकारी), शैक्षणिक योग्यता, श्रेणी (यदि लागू हो) तथा वांछित कार्यक्रम का चयन करना होता है। अभ्यर्थी को यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि सभी प्रविष्टियाँ सही एवं प्रमाणिक हों, क्योंकि आगे की प्रक्रिया इन्हीं सूचनाओं के आधार पर संचालित होती है। साथ ही, आवश्यक दस्तावेज़ों की स्कैन प्रति भी अपलोड करनी होती है।
- ◆ द्वितीय चरण में विश्वविद्यालय द्वारा प्रस्तुत दस्तावेज़ों का सत्यापन (Document Verification) किया जाता है। इसमें अभ्यर्थी की शैक्षणिक योग्यता (जैसे 12वीं की अंकतालिका), पहचान प्रमाण, जन्मतिथि प्रमाण तथा अन्य आवश्यक प्रमाण-पत्रों की जांच की जाती है। यह सत्यापन प्रक्रिया ऑनलाइन माध्यम से अथवा आवश्यकता अनुसार ऑफलाइन भी की जा सकती है। सत्यापन का उद्देश्य अभ्यर्थी द्वारा प्रस्तुत जानकारी की प्रामाणिकता सुनिश्चित करना होता है, जिससे प्रवेश प्रक्रिया निष्पक्ष एवं विश्वसनीय बनी रहे।

- ❖ तृतीय चरण में अभ्यर्थी को निर्धारित शुल्क (Fee Payment) का भुगतान करना होता है। विश्वविद्यालय विभिन्न डिजिटल माध्यमों—जैसे नेट बैंकिंग, डेबिट/क्रेडिट कार्ड या अन्य ऑनलाइन भुगतान प्रणालियों—के माध्यम से शुल्क जमा करने की सुविधा प्रदान करता है। शुल्क का भुगतान निर्धारित समय-सीमा के भीतर करना अनिवार्य होता है, अन्यथा आवेदन निरस्त हो सकता है। भुगतान के पश्चात अभ्यर्थी को रसीद (Payment Receipt) प्राप्त होती है, जिसे भविष्य के संदर्भ हेतु सुरक्षित रखना आवश्यक है।
- ❖ चतुर्थ एवं अंतिम चरण में विश्वविद्यालय द्वारा नामांकन की पुष्टि (Enrollment Confirmation) की जाती है। सभी औपचारिकताओं के पूर्ण होने तथा शुल्क के सफल सत्यापन के उपरांत अभ्यर्थी को औपचारिक रूप से कार्यक्रम में प्रवेश प्रदान कर दिया जाता है। इसके साथ ही, अभ्यर्थी को नामांकन संख्या (Enrollment Number) एवं लॉगिन विवरण (Login Credentials) प्रदान किए जाते हैं, जिनके माध्यम से वह लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम (LMS) पर अध्ययन सामग्री, कक्षाएँ, असाइनमेंट एवं अन्य शैक्षणिक संसाधनों का उपयोग कर सकता है।
- ❖ इस प्रकार, यह सुव्यवस्थित एवं चरणबद्ध प्रवेश प्रक्रिया विद्यार्थियों के लिए सहज, सुरक्षित एवं पारदर्शी अनुभव सुनिश्चित करती है तथा उन्हें बिना किसी बाधा के अपने शैक्षणिक सफर की सफल शुरुआत करने में सहायक सिद्ध होती है।



16. शुल्क संरचना (Indicative)

मद	राशि
Registration Fee	1000
Tuition Per Semester	14000
Other Fee	7000
First Semester	22000
Full Course Approx	64000

17. गुणवत्ता आश्वासन प्रणाली

विश्वविद्यालय इस कार्यक्रम की गुणवत्ता सुनिश्चित करने हेतु निम्न व्यवस्थाएँ करेगा:

- UGC-DEB मानकों के अनुसार पाठ्यक्रम निर्माण
- विशेषज्ञ समिति द्वारा समय-समय पर पाठ्यक्रम संशोधन
- Faculty Development Programmes
- Student Feedback System
- Academic Audit
- PCP Quality Review

18. शैक्षणिक संसाधन (Faculty Resources)

एम.ए संस्कृतम् कार्यक्रम उच्च कोटि के विद्वान एवं अनुभवी प्राध्यापकों के मार्गदर्शन में संचालित होता है, जो संस्कृत वाङ्मय के अत्यंत समृद्ध और विविध क्षेत्रों में विशिष्ट दक्षता रखते हैं। वे न केवल वैदिक साहित्य, महाकाव्य, नाटक और पौराणिक आख्यानों के गहन अध्येता हैं, बल्कि पाणिनीय व्याकरण की वैज्ञानिक सूक्ष्मताओं और काव्यशास्त्र के रस, ध्वनि एवं अलंकार जैसे सिद्धांतों में भी पूर्णतः पारंगत हैं। ये आचार्य केवल सैद्धांतिक और पारंपरिक ज्ञान तक सीमित न रहकर, संस्कृत की इस महान थाती को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में जीवंत रूप से प्रस्तुत करते हैं। उनका मार्गदर्शन विद्यार्थियों को भाषाई शुद्धता और सूक्ष्म विश्लेषण की कला सिखाता है, जिससे उनमें तार्किकता, स्वतंत्र वैचारिक चिंतन और एक समालोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है। प्राचीन भारतीय मेधा को समकालीन चुनौतियों से जोड़ते हुए ये प्राध्यापक विद्यार्थियों को एक ऐसे प्रबुद्ध नेतृत्व के रूप में तैयार करते हैं, जो समाज और राष्ट्र के नैतिक एवं सांस्कृतिक उत्थान में अपना प्रभावी योगदान दे सकें।

कार्यक्रम में ग्रंथ-केंद्रित अध्ययन (Textual Study Approach) को विशेष महत्व दिया जाता है, जिसके अंतर्गत मूल संस्कृत ग्रंथों एवं उनके भाष्यों का अध्ययन कराया जाता है। साथ ही,

छात्रों को दार्शनिक तर्क-वितर्क (Dialectical Method), विमर्श (Debate), एवं आलोचनात्मक लेखन (Critical Writing) के माध्यम से सक्रिय अधिगम (Active Learning) के लिए प्रेरित किया जाता है।

प्रत्येक विद्यार्थी को अनुभवी मेंटर द्वारा व्यक्तिगत शैक्षणिक मार्गदर्शन प्रदान किया जाता है, जिससे वे शोध-प्रवृत्ति, स्वतंत्र चिंतन एवं विषय की गहराई को आत्मसात कर सकें। शोध परियोजनाओं, असाइनमेंट्स एवं प्रस्तुतीकरणों के माध्यम से विद्यार्थियों को अकादमिक लेखन एवं अनुसंधान पद्धति का व्यावहारिक अनुभव भी प्रदान किया जाता है। यह समग्र शैक्षणिक ढांचा विद्यार्थियों को शिक्षण, अनुसंधान, सिविल सेवा, लेखन तथा बहुविषयक (interdisciplinary) क्षेत्रों में उत्कृष्ट करियर हेतु सक्षम बनाता है।

19. अवसंरचना सहयोग (Infrastructure Support)

पतंजलि विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान की गई सुदृढ़ एवं आधुनिक अवसंरचना, ओपन एवं डिस्टेंस लर्निंग (ODL) प्रणाली के अंतर्गत दर्शनशास्त्र के अध्ययन को अत्यंत प्रभावी एवं सुलभ बनाती है। विश्वविद्यालय का डिजिटल शिक्षण पारितंत्र (Digital Learning Ecosystem) विद्यार्थियों को स्थान एवं समय की सीमाओं से परे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करता है।

इस अंतर्गत उच्च गुणवत्ता वाले वीडियो व्याख्यान, ई-पुस्तकें, प्राचीन एवं आधुनिक दार्शनिक ग्रंथ, इंटरैक्टिव अध्ययन सामग्री तथा स्व-मूल्यांकन (Self-assessment) उपकरण उपलब्ध कराए जाते हैं, जिससे विद्यार्थी अपनी गति से गहन अध्ययन कर सकते हैं। लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम (LMS) के माध्यम से पाठ्यक्रम संचालन, असाइनमेंट सबमिशन, ऑनलाइन परीक्षा एवं प्राध्यापकों के साथ संवाद सुचारु रूप से संचालित होता है।

संस्कृत साहित्य की समृद्ध परंपरा को जीवंत बनाए रखने हेतु विभाग द्वारा नियमित रूप से ऑनलाइन संगोष्ठियाँ, वेबिनार एवं 'शास्त्रार्थ' जैसे विचारचर्चा सत्र आयोजित किए जाते हैं। - इन सत्रों में प्राचीन संस्कृत ग्रंथों की समकालीन प्रासंगिकता, काव्यशास्त्रीय सिद्धांतों और आधुनिक साहित्यिक प्रवृत्तियों पर विद्वानों द्वारा गहन विमर्श किया जाता है। यह गतिविधियाँ विद्यार्थियों में केवल संवादात्मक कौशल ही नहीं, बल्कि श्लोकव्याख्या-, आलोचनात्मक विश्लेषण और सूक्ष्म साहित्यिक दृष्टि का विकास करती हैं। ऐसे बौद्धिक सत्रों के माध्यम से विद्यार्थी शास्त्रीय सिद्धांतों को आधुनिक वैश्विक परिप्रेक्ष्य में समझने और प्रस्तुत करने की अद्वितीय क्षमता प्राप्त करते हैं।

विश्वविद्यालय का डिजिटल पुस्तकालय (Digital Library) दर्शनशास्त्र से संबंधित प्राचीन शास्त्रों, टीकाओं, शोध-पत्रों, जर्नल्स एवं संदर्भ पुस्तकों का विशाल भंडार उपलब्ध कराता है, जो उच्च स्तरीय अध्ययन एवं अनुसंधान के लिए अत्यंत उपयोगी है।

यह समेकित एवं उन्नत अवसंरचना सुनिश्चित करती है कि विद्यार्थी केवल सैद्धान्तिक ज्ञान तक सीमित न रहकर, गहन चिंतन, तार्किक विश्लेषण एवं अनुसंधान कौशल में भी दक्षता प्राप्त करें, जिससे वे वैश्विक परिप्रेक्ष्य में प्रतिस्पर्धी एवं सक्षम बन सकें।

20. प्रयोगशाला सहयोग एवं पुस्तकालय संसाधनों की आवश्यकता

प्रस्तुत पाठ्यक्रम की प्रकृति को दृष्टिगत रखते हुए पृथक प्रयोगशाला की आवश्यकता नहीं है। तथापि, अधिगम प्रक्रिया को सुदृढ़ एवं प्रभावी बनाने हेतु विश्वविद्यालय द्वारा एक समृद्ध डिजिटल पुस्तकालय सुविधा उपलब्ध कराई गई है। इस डिजिटल पुस्तकालय के माध्यम से शिक्षार्थियों को विविध शैक्षणिक संसाधनों, शोध-पत्रों, संदर्भ ग्रंथों तथा अन्य प्रासंगिक अध्ययन सामग्रियों तक व्यापक पहुँच प्राप्त होती है। यह व्यवस्था सतत अधिगम एवं गुणवत्तापूर्ण अनुसंधान को प्रोत्साहित करने में सहायक सिद्ध होती है।

21. कार्यक्रम की लागत का अनुमान एवं प्रावधान

कार्यक्रम के अभिकल्पन, विकास, कार्यान्वयन तथा अनुरक्षण से संबंधित समस्त व्यय का वहन विश्वविद्यालय द्वारा वार्षिक बजट सत्र में स्वीकृत प्रावधानों के अनुरूप किया जाएगा। इस हेतु आवश्यक वित्तीय संसाधनों का आवंटन विश्वविद्यालय की निर्धारित वित्तीय नीतियों एवं प्रक्रियाओं के अनुसार सुनिश्चित किया जाएगा।